ASSISTANT PROFESSOR — BABLY KUMARI
PAPER-1 B.Ed. FIRST YEAR

Unit 5: Learner's Identity Development.

(3) Topic — Understanding Identity Formation.

पहचान की अवधारणा — पहचान किसी व्यक्ति के गुण, विशेषता, सामाजिक संबंधों, भूमिकाओं को परिभाषित करती है। सामान्य रूप में, पहचान एक व्यक्ति के विचारों, इच्छाओं, चेतना और विश्वासों का संग्रह है। एक व्यक्ति अपने साथ कई प्रकार की पहचान का वहन करता है। जैसे:- एक व्यक्ति शिक्षक, माता-पिता, दादा, भाई, बहन, मित्र, पुत्र, आदि कई प्रकार के पहचान को लिये हो सकता है।

व्यक्ति की पहचान जिस रूप में आश्रित है व्यक्ति की भूमिका भी उसी के अनुकूल रहती है।

परिभाषाए :

(1) डिविटे के अनुसार :- 'पहचान हर रोज का

शब्द है जिसे रोज अवसर अपनी के लिए की वे कौन है? का प्रयोग करते है।

(2) एरीक्सन के अनुसार — 'किशोर ~~अपने~~ अपने परिवार और स्वयं के प्रति विश्वास का भाव है जो उन्हे स्वायत तथा कार्यों की अगुआई मे स्वयं को सहज रखता है। जहाँ वह कहीं न कहीं अपनी पहचान या भूमिका के स्पष्टता की ओर अग्रसर रहता है।

<u>निष्कर्षत:</u> — पहचान को साधारण शब्दों मे व्यक्ति के स्वयं के प्रति आत्मसम्पूर्णता के रूप मे परिभाषित किया जाता है।